ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. NO.- 121-122**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

आधुनिकता और ग्रामीण जीवन

डॉ0 यतेन्द्र कुमार मिश्र

प्रवक्ता– समाजशास्त्र, रामनाथ पाठक इण्टर कालेज,
मुररपट्टी–ललगंज, बलिया (उ0प्र0), भारत

Received- 04 .11. 2021, Revised- 10.11. 2021, Accepted - 14.11.2021 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः ***ग्रामीण सामाजिक संरचना का मुख्य आधार जाति व्यवस्था रही है। भारत के आजादी के बाद जाति व्यवस्था से संबंधित सोचों में काफी परिवर्तन होता दिख रहा है। आज कल ग्रामीण सामाजिक संरचना में जातियों का परम्परागत प्रभाव कम होने लगा है। बहुत लोगों को ऐसा मानना है कि सभी जातियों के लिए संवैधानिक समानता प्राप्त होने से जाति आधारित सामाजिक दूरी कम हुई है। जबकि पहले परम्परागत प्रतिबंधों के आधार पर एक स्पष्ट विभाजन देखने को मिलता था। लेकिन आज ऐसे प्रतिबंधों में लगातार गिरावट आते जा रही है। गांवों में भी आज एक ऐसा वर्ग उभर रहा है जो शहरी जीवन, औद्योगिक पर्यावरण एवं आधुनिक शिक्षा से प्रभावित होकर जाति व्यवसाय से संबंधित को मानने को तैयार नहीं है। गाँवों में जातिगत व्यवसाय से संबंधित बाते या मुद्दे भी अब कमजोर पड़ते जा रहे हैं। जो कुछ समय पूर्व तक केवल निम्न जातियों द्वारा किया जाता था। व्यवसाय की दृष्टि से अब उच्च और निम्न वर्ग के बीच कोई असमानता नहीं रही है। फिर भी आज भी ग्रामीण क्षेत्रो में सुअर पालने की व्यवसाय एक दो जातियों द्वारा ही अपनाया जाता है। हालांकि इस व्यवसाय को जब बड़े पैमाने पर किया जाता है, तो उच्च जातियों द्वारा भी इस व्यवसाय को अपनाते देखा गया है, परन्तु यह संख्या नगण्य है।***

कुंजीभूत शब्द– ग्रामीण सामाजिक संरचना, ग्रामीण सामाजिक संरचना, परम्परागत प्रभाव, संवैधानिक समानता ।

यदि हम परंपरागत ग्रामीण समाज पर नजर डालते है तो प्रत्येक व्यक्तियों के सामाजिक मूल्यों पर परम्पराओं का स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता था। लोग यह मान लेते थे कि यह सामाजिक स्थिति उसके भाग्य में लिखा है। इसे बदला नहीं जा सकता है। उनकी भाग्यवादी और निराशावादी सोंच के चलते वे इसे परिवर्तित करने का प्रयास भी नहीं करते थे। आज आधुनिक शिक्षा, लौकिकीकरण तथा प्रजातांत्रिक मूल्यों के प्रभाव से इस प्रवृत्ति में व्यापक परिवर्तन हुआ है। आज ग्रामीण चाहे जिस जाति वर्ग के हो अपनी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति में सुधार के प्रति काफी सजग दिखते हैं। आज सभी ग्रामीण अपने भाग्यवादी सोंच में बदलाव लाते हुए यह मानने लगे हैं कि परिश्रम और ज्ञान के द्वारा सामाजिक स्थिति में परिवर्तन करना संभव है। परिणाम स्वरूप सामाजिक संरचना में तेजी से बदलाव दिखने लगा है।

भारत में परम्परागत ग्रामीणों का आर्थिक जीवन मात्र एक कृषि कार्य था, परन्तु आजादी के बाद ग्रामीण पुनर्निर्माण की अनेक योजनाएँ कार्यान्वित हुई। इसके चलते ग्रामीण आर्थिक संरचना में भी परिवर्तन आने लगे। कृशि के क्षेत्र में सभी ग्रामीण आधुनिक साधनों का उपयोग कर रहे हैं। इसका प्रभाव से उत्पादन में तो वृद्धि हुई ही है, ग्रामीणों का जीवन गाँव तक सीमित न रहकर एक बड़े क्षेत्र से संबंध रखने की आवश्यकता पड़ी। परंपरागत कृषि का उद्देश्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने तक ही सीमित था, परन्तु नये–नये औद्योगिकी के प्रयोग कर आज कृशि से आर्थिक लाभ कमाना मुख्य उद्देष्य हो गया है। यानि कृषि का व्यापारीकरण हो गया है, जो ग्रामीण जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन ला दिया है। परम्परागत अर्थव्यवस्था मूल रूप से जजमानी व्यवस्था, साहुकारों और जमींदारों से स्थापित संम्बन्धों पर निर्भर व्यवस्था थी जो काफी सरल व्यवस्था थी, परन्तु आज यह व्यवस्था एक जटील स्वरूप ग्रहण कर चुका है, आज जमींदारों और महाजनों का प्रभाव समाप्त हो चुका है तो ग्रामीण सिर्फ कृषि पर निर्भर न रहकर नौकरी, दस्तकारी एवं व्यापार के द्वारा भी जीविकोंपार्जन करने की कोशिश कर रहे हैं। छोटे किसान और श्रमिकों को बड़े कृषक के षोशण से मुक्ति मिल रही है। पहले बंधुआ मजदूर प्रथा थी परन्तु कानून बनाकर इस प्रथा को समाप्त कर दिया गया है, जिससे इस वर्ग के लोगों में तेजी से बदलाव आ रही है। इसके साथ ही साथ यह भी एक सच है कि एक नये वर्ग का उदय हुआ है जिसके अधिकार एवं शक्ति बहुत हद तक पुराने जमींदारों के समान है।

भारतीय गांवों की राजनैतिक जीवन भी बहुत तेजी से बदल रहा है। कुछ वर्ष पूर्व तक गांव का नेतृत्व एक ही खानदान के लोग पीढ़ी–दर–पीढ़ी करते थे। यॉनि ग्रामीण नेतृत्व वंशानुगत था, जिससे गांव के पंच, मुखिया का निर्धारण वंश परंपरा के अनुसार किया जाता था, परंतु वर्तमान ग्रामीण नेतृत्व वंशागत नहीं, बल्कि अर्जित हो गया है, जिसका निर्णय वयस्क मताधिकार के प्रयोग से किया जाता है। इसमें वंश और आयु एवं जातिय स्थिति का कोई महत्व नहीं है। युवकों एवं निम्न जातियों को भी नेतृत्व में भाग लेने का समान अवसर प्राप्त हुआ है। पंचायती राज व्यवस्था में कुछ जातियों के लिए स्थान सुरक्षित कर देने के कारण ग्रामीण नेतृत्व में सभी वर्गों की सहभागिता बढ़ गयी है। परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में शक्ति

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

संरचना तथा राजनैतिक सहभाग में महत्त्वपूर्ण बदलाव हुआ है। आज गांव का राजनैतिक जीवन गांवों तक ही सीमित न रहकर बड़े राजनैतिक दलों से प्रभावित होने लगा है। ग्रामीणों की राजनैतिक चेतना प्रादेशिक ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय हो गयी है। इसी जागरूकता के कारण उनके अंदर इतनी साहस हो गयी है कि अब वे नेताओं और पदाधिकारियों के षोशण के विरूद्ध आवाज उठाने लगे हैं। सच कहा जाय तो अब ग्रामीण राजनीति संपूर्ण देश से संबंध हो चुकी है।

आधुनिक शिक्षा पद्धति ने ग्रामीण जीवन को अत्याधिक प्रभावित किया है। जो ग्रामीण युवक शहरों से आधुनिक शिक्षा ग्रहण कर गांव लौटते हैं, तो वे शेष युवकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन जाता है क्योंकि उनके पास अब एक प्रगतिशील विचार एवं व्यवहार होता है। गांव में प्राथमिक स्तर से महाविद्यालयों तक की व्यवस्था हो जाने के कारण नई पीढ़ी के विचारों और विश्वासों में बदलाव आने लगा है। शिक्षा के प्रभाव के कारण उच्च जाति, पिछड़ी जाति एवं निम्न जाति के बीच आपसी समन्वय की भावना दिखने लगी है। शिक्षा के क्षेत्र में गांवों में बहुत बड़ी बदलाव हुई है जिसे एक क्रांतिकारी परिवर्तन कहा जा सकता है। शिक्षा नीतियों व्यवसाय परक बन रही है जिससे ग्रामीण युवकों को आत्मनिर्भरता के प्रति सामर्थवान बनाया है। ग्रामीण युवक अब सिर्फ नौकरी पर निर्भर न रहकर लघु उद्योग धंधे को अपनाकर अपना आर्थिक विकास कर रहा है। भारत सरकार भी बुनियादी शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा एवं सामाजिक शिक्षा के प्रसार पर विषेश बल दिया जा रहा है। सरकार के द्वारा प्राथमिक स्तर पर सभी का नामांकन अभियान चलाया जा रहा है और बच्चों की शिक्षा निःशुल्क तथा अनिवार्य कर दी गई है। ग्रामीणों के शैक्षिक जीवन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया है, जिसकी वजह से गांवों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को बल मिला है।

वर्तमान ग्रामीण समाज में ग्राम वासियों की महिला शिक्षा, नौकरी तथा पर्दा प्रथा के प्रति मानसिकता बदली है। अब वे महिलाओं को पुरानी परम्परा के तहत जकड़कर नहीं रखना चाहते, बल्कि वे पुरुषों के समान महिलाओं को भी हर क्षेत्र में आगे लाना चाहते है। कुछ ऐसे भी सह–शिक्षा विद्यालय है जहाँ लड़कों की तुलना में लड़कियों की संख्या अधिक है। इससे स्पष्ट है कि ग्रामीण अभिभावक बालिका शिक्षा के प्रति अत्याधिक जागरूक है। महिलाओं की नौकरियों में भी आशानुरूप सफलता मिली है। महिलाए भी अब विभिन्न उच्च पदों पर पुरुषों की तरह ही आसीन है।

उपर्युक्त मुख्य परिवर्तनों के अतिरिक्त ग्रामीण समुदाय में पारस्परिक सहायता एवं सामुदायिक भावना का ह्रास हुई है। आज कल अपने निजी स्वार्थ के चलते संपूर्ण गांव का अहित कर देना भी गलत नहीं माना जाता है। उपयोग के क्षेत्र में गांव में ऐसी वस्तुओं का प्रचलन बढ़ा है जो ग्रामीणों के सामुदायिक जीवन के अनुकूल नहीं है। साधनों और आवश्यकताओं के बीच असंतुलन बढ़ने के कारण गांव में भी संपत्ति के लिए अपराध बढ़ें है। समस्त परिवर्तनों के बीच यह ध्यान रखना आवश्यक है कि ग्रामीण सामाजिक संरचना में परिवर्तनों का स्वरूप आंशिक ही है। इसका तात्पर्य है कि विभिन्न दशाओं के प्रभाव से गाँव आज भी इस प्रकार जुड़े हुए हैं कि ग्रामीण इन्हें आसानी से छोड़ना नहीं चाहते। फिर भी जो परिवर्तन आ रहे है, उससे पता चलता है कि ग्रामीण सामाजिक संरचना के विभिन्न क्षेत्रों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया गतिशील है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Aiyar, S.P. - Modernization of Traditional society.
2. Anderson C.A. - The impact of Educational system of technological change and modernization in Hose liste.
3. Apter D.E. - The politics of Modernization Chicago press 1965
4. Crangrade, K.D. - Social mobility in India A study of depressed class, man in India.
5. Huntigton, S.P. - Political order in changing societies New heaven
6. Goode, W.J. - Industriazation and family change' in Haselite.
7. Srivastava, M.M. - Caste in modern India.
8. Davis, Kingsley - Human society, Surjeet Publication.

*****